श्री राम चन्द्र मिशन®

सितम्बर २०१०

भाग ३, अंक ५

India ECHOES

ONE WORLD ONE HUMANITY

For Private Circulation Only

गुरुदेव का ८४वाँ जन्मदिवस समारोह

२३ – २६ जुलाई, २०१०, लखनऊ

६० एकड़ की जमीन में फैला हुआ लखनऊ आश्रम, भारत के बड़े आश्रमों में से एक है। यहाँ पर अभ्यासियों के लिये एक बड़ी कॉलोनी बनाने की भी योजना है। वर्षा ऋतु के समय में भारी बारिश की सम्भावना को ध्यान में रखते हुए इस बार परिसर में काफी तैयारियां की गईं। बारिश के पानी के निकास को मद्देनज़र रखते हुए पक्की सड़कें बनाई गई, जिसके कारण अभ्यासियों को आने –जाने में काफी सुविधा हुई। ध्यान–कक्ष, भोजनालय, कैन्टीन व अन्य स्टालों पर जल–प्रतिरोधक विशालकाय ढाँचें बनाये गये।

गुरुदेव, २४ जुलाई की दोपहर को वहाँ पहुँचे, स्थल पर एकत्रित १५००० अभ्यासियों ने उनका स्वागत किया। उस शाम को उन्होंने नवनिर्मित ध्यान–कक्ष को बाबूजी महाराज को समर्पित किया। १५००० वर्गफीट के इस कक्ष में ३००० लोगों के बैठने की क्षमता है।

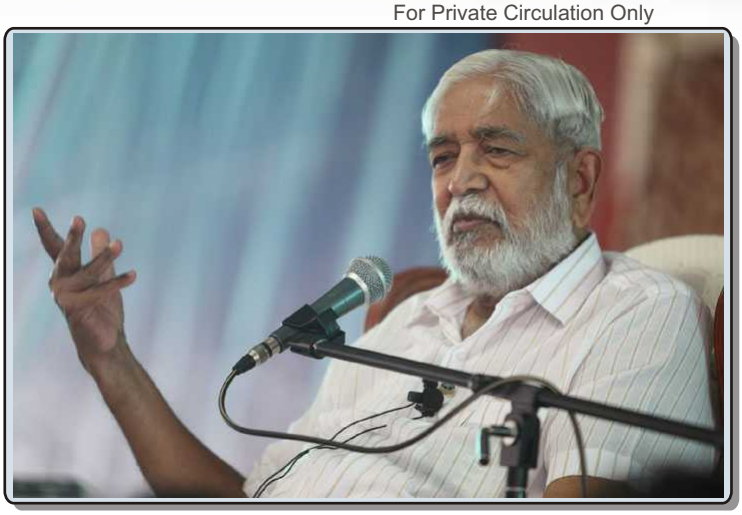

गुरुदेव, जुलाई २०१० को लखनऊ में अभ्यासियों को सम्बोधित करते हुए

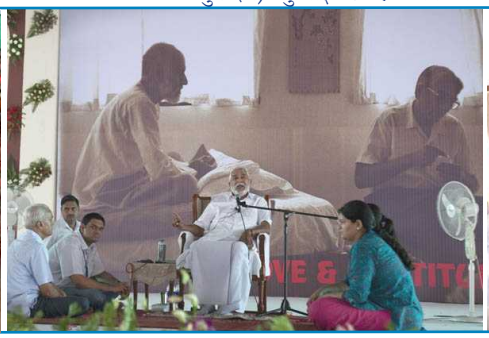

२३ जुलाई को शुरू हुए इस समारोह में भारत तथा विदेशों से आये लगभग ४०,००० से भी अधिक लोगो ने भाग लिया एवं इसका विषय था – 'प्रेम और कृतज्ञता'। इस समारोह का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी था कि इसमें गुरुदेव ने २४ विवाह सम्पन्न करवाये। हमें उनकी तीन विचार–उत्प्रेरक वार्ताओं को सुनने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। २४ जुलाई को "सहज मार्ग–अनन्त की ओर" विषय पर वार्ता देते हुए उन्होंने कहा :–

★सहज मार्ग में ४६ वर्ष रहने के बाद भी मैं अनन्त की यात्रा पर हूँ। सहज मार्ग में हम अनन्त की ओर बढ़ते हैं। हमें अनन्त पर विजय हासिल करनी है और उसे अपनी मुट्ठी में करना है।

★हम सोचते हैं कि गुरुदेव हमारे लिये सब कुछ करेंगे, लेकिन हमारा सहयोग शत–प्रतिशत होना चाहिये तब वे १००० प्रतिशत मद्द करेंगे।

★साधना अपने आप में लक्ष्य नहीं है बल्कि साधना के माध्यम से हम अपनी निर्भरता को गुरुदेव के हवाले कर देते हैं।

२५ जुलाई को गुरू–पूर्णिमा की सुबह वार्ता देते हुए उन्होंने कहा:–

★जो लोग इस दिन गुरू के साथ होते हैं, वे तीव्र गति से उन्नति करते हैं।

★हमें अपने खुद के कार्यों और अपनी प्रगति की जिम्मेदारी की आवश्यकता को समझना चाहिये।

वार्ता से पहले और वार्ता के दौरान गुरुदेव की सांस फूल रही थी और शाम को भी उनकी वही हालत थी। उन्होंने कुछ अभ्यासियों को बताया, "मुझे नहीं मालूम कि मैं बीमार हूँ या नहीं, लेकिन मेरी तबियत बिल्कुल ठीक नहीं है।"

२६ जुलाई की सुबह उन्होंने अपनी समापन वार्ता में कहा:–

★जैसाकि बाबूजी महाराज कहा करते थे कि केवल एक चीज का कोई अन्त नहीं है– वह है आध्यात्मिक जीवन, क्योंकि आत्मा, ईश्वर का एक अंश या चिंगारी होने के कारण अमर और चिरस्थायी है।

★बाबूजी ने कहा है कि ममता (मातृ–प्रेम) मानव जीवन में सबसे पवित्र है। अतः अपने गुरू को अपनी माँ के रूप में स्वीकार कीजिये।

★जब हम किसी चाह के बिना या बदले में कुछ पाने की उम्मीद के बिना सेवा करते हैं, वही सही मायने में सेवा है।

★उनके हृदय तक पहुँचने का सबसे आसान रास्ता सेवा है। गुरुदेव को हमारी सेवा की ज़रूरत नहीं है। लेकिन यदि यह स्वाभाविक है जैसे कि एक बच्चा अपनी माँ की मद्द करता है क्योंकि... मैं क्या कहूँ..., माँ के साथ एक होकर, और अन्त में वह माँ से एक हो ही जाता है।

बहन अपर्णा घोष, रंजना मेहता, मीना मिश्रा और भाई गुरुप्रीत सिंह ने सुबह

और शाम के सत्र में कई भजन गाये। इसके अलावा बहन के. सौम्या द्वारा एक भरतनाट्यम नृत्य, बड़ोदा केन्द्र के अभ्यासियों द्वारा सन्त कबीर के चरित्र पर आधारित एक नाटक और रूस के अभ्यासियों द्वारा एक संगीत कार्यक्रम भी पेश किया गया।

स्मृति, क्रेस्ट, वी बी एस ई, एस एच पी टी, एकोज़ समाचार–पत्र, वेबसाइट और आई.टी. दल जैसे मिशन के कई कार्यों के लिये समारोह में मिलकर आगे की कार्य योजना बनाने का यह एक अच्छा अवसर था। मिशन की कार्यकारी समिति की बैठक के बाद गुरुदेव ने उसी समय विमोचित हुई पुस्तक 'विस्पर्स फ्रॉम द ब्राइटर वर्ल्ड–आ थर्ड रेवेलेशन' के बारे में बात करते हुए कहा, "जो भी कुछ यहाँ होता है, उन्हें मालूम होता है। यह एक मछली के तालाब की तरह है, हम सब अन्दर हैं, लेकिन हमें बाहर से देखा जा रहा है।" अपने स्वास्थ्य और कार्य की माँग के बारे में ज़िक्र करते हुए उन्होंने बताया कि ज़रूरत पड़ने पर बाबूजी ब्रिटिश वाणिज्य दूतावास की कई मंज़िल तक चढ़ सकते थे और उन्होंने कहा था, "मैं कमजोर हो सकता हूँ, मैं अशिक्षित हो सकता हूँ लेकिन जब ज़रूरत पड़ती है तो मैं कुछ भी कर सकता हूँ।" गुरुदेव ने इस बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि, "जो मेरे गुरुदेव ने किया, क्या मुझे उसका, कम से कम एक सौवाँ या एक हजारवाँ भाग भी करने का प्रयास नहीं करना चाहिये?"

गुरुदेव पूरे विश्व भर से आये हुए अभ्यासियों और कार्यकर्ताओं से मिले, उनसे मिशन के मसलों पर चर्चा की और उनका मार्गदर्शन किया। साथ ही वे अभ्यासियों (और उनके बच्चों) से मिले और उनकी व्यक्तिगत समस्याओं और प्रश्नों को धैर्यपूर्वक सुना।

समारोह के दौरान बाल–केन्द्र हमेशा की तरह गतिविधियों और हर्षोल्लास का मुख्य केन्द्र बना रहा। अलग–अलग तरह के क्रियाकलापों जैसे जादू और कठपुतली का तमाशा, खेल, चित्रकारी और हस्तशिल्प आदि के द्वारा ४,२०० से भी ज्यादा बच्चों का मनोरंजन किया गया।

इस पूर्ण व्यवस्थित समारोह में गुरुदेव हमेशा एक परिश्रमी माँ के रूप में याद रखे जायेंगे – एक माँ, जो सदैव अथक परिश्रम करती है और अपने स्वास्थ्य तथा अपने आराम के बारे में सोचे बिना सामूहिक तथा व्यक्तिगत रूप से अपने बच्चों की देखभाल करती है।

भोजनालय

ध्यान–कक्ष

बाल–केन्द्र

गुरुदेव का दौरा

चेन्नई

गुरुदेव ने अपना ज्यादातर समय आराम करते हुए तथा घर और आश्रम के बीच आवागमन करते हुए बिताया। वे 'गायत्री' में सुबह और शाम के समय आगुन्तकों से मिले और अकसर सत्संग कराया। वे मरीना बीच पर भी गये, वहाँ उन्होंने अभ्यासियों के साथ बातचीत की और उनके प्रश्नों के उत्तर दिये। जब उनसे अभ्यासी की भूमिका और जीवन की अपेक्षाओं के बारे में पूछा गया तो उन्होंने स्पष्ट जबाब देते हुए कहा कि " जो काम किया जाना है, उसे बिना किसी अपेक्षा के करो। यही "कर्मयोग" का सार है।" एक घंटे के चुटकलों, प्रश्नोत्तर और आइसक्रीम लेने के बाद वे चले गये, जबकि अभ्यासी दिल में ये कामना लिये उन्हें देखते रहे कि काश! समय रुक जाये और वे गुरुदेव के साथ कुछ समय और बिता सकें। वे स्कूल में कई बार गये और फिर ८ जुलाई को कोलकाता के लिये रवाना हुए।

सिलीगुड़ी, पश्चिम बंगाल

गुरुदेव ने ८ और ९ जुलाई को सिलीगुड़ी का दौरा किया। स्थानीय अभ्यासियों के साथ–साथ नेपाल जैसे आसपास के केन्द्रों से आये हुए अभ्यासियों ने

भी गुरुदेव के बागड़ोगरा आगमन पर उनका स्वागत किया।

हाल ही में नेपाल गणराज्य में मिशन का पंजीकरण हुआ है। मिशन के कार्यकर्ताओं के नाम अपने संदेश में उन्होंने लिखा है, "यह दिन नेपाल की जनता के लिये एक महत्वपूर्ण दिन है, भले ही सचेत रूप से उन्हें इसकी कोई जानकारी न हो। अब हमें यहाँ के लोगों की सही मायनों में आध्यात्मिक सेवा करने के लिये ईमानदारी, प्रेम और समर्पण के साथ लग जाना चाहिये।" फलस्वरूप, नेपाल के निदेशक मंड़ल और सदस्यों की आम सभा की पहली बैठक सिलीगुड़ी आश्रम में १० जुलाई को हुई

११ तारीख की सुबह गुरुदेव ने ध्यान-कक्ष का उद्घाटन किया और इस अवसर पर उन्होंने अपनी वार्ता में अभ्यासियों में बाह्य और व्यावहारिक परिवर्तन की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि जब तक ऐसा नहीं होगा, तब तक बाकी सभी चीजें व्यर्थ हैं। उन्होंने यह भी कहा कि, "सहज मार्ग में मैं पिछले ४० सालों से देख रहा हूँ कि मनुष्य के रूप में हममें कोई सुधार नहीं हो रहा है, आप अन्दर से क्या हैं यानि आध्यात्मिक स्थिति, वह तो गुरुदेव ही जानते हैं, पर जब तक आपका भीतर और बाहर एक समान नहीं हो जाते, भीतर और बाहर, विचार और कर्म में संतुलन होना ही चाहिये, आप वही कहें जो आप कहना चाहते है, और जो कहना चाहते है वही कहें। ये सहज मार्ग के मूलभूत सिद्धान्त हैं। मुझे आशंका है कि हमारे प्रशिक्षक, एक अभ्यासी की इन बुनियादी आवश्यकताओं के बारे में जोर नहीं देते।"

गुरुदेव ने घोषणा की कि सहज मार्ग स्प्रिचुएलिटी फाउंडेशन के द्वारा सिलीगुड़ी आश्रम में भोजन और आवास निःशुल्क उपलब्ध कराया जायेगा। उन्होंने आशा व्यक्त की कि पूर्व और उत्तर पूर्वोत्तर राज्य के सभी अभ्यासी इसका उपयोग रीट्रीट के रूप में करेंगे और यहाँ कम से कम ३,४ क्षेत्रीय समारोह आयोजित किये जायेंगे।

११ तारीख की दोपहर में गुरुदेव ने कोलकाता के लिये प्रस्थान किया। कोलकाता आश्रम में आने से पहले वे २ दिनों तक भाई अजय भट्टर के निवास पर रुके। १४ से १९ जुलाई तक रूस और अन्य सी.आई.एस. देशों से आये लगभग ३०० अभ्यासियों के लिये एक गोष्ठी आयोजित की गई। प्रातः ६ बजे से रात्रि ९ बजे तक के दैनिक कार्यक्रम में सत्संग, व्यक्तिगत सिटिंग, विभिन्न विषयों पर वार्ताएं तथा सामूहिक चर्चायें शामिल थीं। शाम के समय गुरुदेव ने अपने कॉटेज के लॉन में अभ्यासियों के साथ समय बिताया। उनके प्रश्नों के उत्तर देते हुए उनकी आशंकाओं का निराकरण किया तथा गहनतम शिक्षाओं से भरे कई किस्से सुनाये।

गोष्ठी का समापन अभ्यासियों द्वारा 'परिवर्तन के लिये तत्परता', 'सहज मार्ग का अभ्यास' और 'विचार शक्ति' जैसे विषयों पर दी गई वार्ताओं के साथ हुआ। इन वार्ताओं में अभ्यास और हमारे दैनिक जीवन पर उसका प्रभाव से सम्बन्धित कुछ सूक्ष्म बातों पर प्रकाश डाला गया।

बाहर से आये हुए अभ्यासियों ने सहयोग और सहिष्णुता का परिचय दिया। कोलकाता के गर्म और उमस भरे वातावरण के कारण उनके स्वास्थ्य सम्बन्धी मसले उनके लिये एक कड़ी कसौटी थी। तथापि, वे गुरुदेव के साथ रहने के जिस मकसद से यहाँ आये थे, इन सभी मुद्दों को उन्होंने उस मकसद के बीच नहीं आने दिया और अपने संकल्प का परिचय दिया।

जयपुर

लखनऊ उत्सव के बाद गुरुदेव ने दिल्ली में पड़ाव लिया और फिर २९ जुलाई

को गुड़गाँव होते हुए सड़क-मार्ग से जयपुर पहुँचे। लगभग ३०० अभ्यासियों ने उनका जोरदार स्वागत किया। वहाँ पहुँचने के बाद उन्होंने नवनिर्मित कॉटेज का उद्घाटन किया। फिर वे कॉटेज में चारों तरफ गये और उसके निर्माण से सम्बन्धित पूछताछ की। उन्होंने बताया कि सड़क-मार्ग से यात्रा करने पर उन्हें हमेशा तरोताजा लगता है, जबकि हवाई जहाज में एक घंटे की उड़ान भी उन्हें बहुत थका देती है। वे बरामदे में झूले पर बैठे और वहाँ एकत्रित अभ्यासियों से बातचीत की।

शाम को वे अपनी कॉटेज से बाहर आये और लॉन में अभ्यासियों के साथ एक घंटे तक बातचीत की। एक अनौपचारिक बातचीत के दौरान उन्होंने कहा कि वे हर तरह की परिस्थिति में खुश रहते हैं। मनुष्य को हर परिस्थिति में हमेशा खुश रहना चाहिये।

जयपुर ध्यान-कक्ष

जयपुर: कॉटेज लॉन

३० तारीख को गुरुदेव ने नया ध्यान-कक्ष बाबूजी महाराज को समर्पित करते हुए उसका उद्घाटन किया। उन्होंने राजस्थान से, विदेशों से तथा आसपास के राज्यों से आये हुए लगभग १५०० अभ्यासियों को सुबह ९ बजे सत्संग कराया। सत्संग के पश्चात उन्होंने अपनी गोल्फ कार्ट में आश्रम का चक्कर लगाया। गाँव के सरपंच तथा अन्य लोगों ने परम्परागत तरीके से गुरुदेव का स्वागत किया। गुरुदेव ने उन सबको प्रसाद बाँटा और आशीर्वाद दिया।

शाम के समय एक घंटे तक गुरुदेव बाहर लॉन में बैठे, उन्होंने बहुत सारे अभ्यासियों से बातचीत की, बच्चों से कविताएं एवं गाने सुने और अभ्यासियों के प्रश्नों के उत्तर दिये।

३१ तारीख की सुबह गुरुदेव ने सत्संग करवाया। शाम के समय उन्होंने वहाँ उपस्थित २०० से भी अधिक विदेशी अभ्यासियों को अपनी कॉटेज में सिटिंग के लिये आमन्त्रित किया। १ अगस्त की सुबह उन्होंने सत्संग करवाया। बहन रंजना मेहता के गाये भजनों को सुनने के पश्चात उन्होंने वहाँ एकत्रित लोगों को सम्बोधित किया। १० एकड़ में फैले आश्रम और उससे सटी कॉलोनी – 'मास्टर्स क्रियेशन' जो २० एकड़ में फैली है, उसका दौरा करने में उन्हें समय लगा।

पूरे दिन वे अभ्यासियों से मिलते रहे। दोपहर में ३ बजे वे हवाई जहाज से मुम्बई जाने के लिये रवाना हुए। जयपुर में अपने इस पड़ाव के दौरान वे अपने कार्यालय के कामों में तथा अन्य प्रकार के प्रशासनिक कार्यों में व्यस्त रहे। उन्होंने वहाँ कुछ प्रशिक्षकों को भी तैयार किया।

मुम्बई

गुरुदेव ने १ अगस्त को मुम्बई जाने की योजना बनाकर वहाँ के अभ्यासियों को आश्चर्यचकित कर दिया। ज्यादातर लोग उसी समय लखनऊ उत्सव के बाद वापस पहुँचे थे। गुरुदेव के आने की खबर सुनकर सभी अभ्यासी भारी बारिश के बावजूद उनके आगमन की तैयारी में लग गये। मुम्बई तथा आसपास के केन्द्रों से लगभग १५०० अभ्यासी इस अवसर पर पनवेल आश्रम में उपस्थित थे।

जयपुर से शाम को ७.२० पर पहुँचने के बाद वे सीधे आश्रम गये। वहाँ उत्साहित युवाओं ने, खासतौर से उनके आगमन के लिये तैयार किये गये गान के साथ उनका शानदार स्वागत किया। गुरुदेव उन सब के बीच काफी प्रसन्न थे। अपने आराम की चिन्ता किये बिना उन्होंने कहा कि वे पहले अपने अभ्यासियों से मिलना चाहते हैं। बहुत सें उतावले दिलों की चाहत को पूरा करने के लिये गुरुदेव भोजनालय में गये ताकि अभ्यासी अपने श्रद्धेय की एक झलक पा सकें।

दूसरे दिन गुरुदेव ने ध्यान-कक्ष से सटी हुई छत पर बैठकर सबको आश्चर्यचकित कर दिया। वे कुछ देर वहाँ ताजी हवा में बैठे और फिर सत्संग कराने के लिये ध्यान-कक्ष में चले गये, जो एक घंटे तक चला। पूरे दिन वे अभ्यासियों से मिलने तथा अपना काम करने में व्यस्त थे। शाम को ३.३० बजे अभ्यासियों ने उन्हें सब के साथ चाय पर आमन्त्रित किया। गुरुदेव ने आधे घंटे तक सबके साथ बैठकर कॉफी तथा नाश्ते का आनन्द उठाया। उसके बाद उन्होंने शाम को ५.३० बजे सत्संग करवाया।

३ तारीख की सुबह ७.३० बजे सत्संग करवाने के बाद उन्होंने एक विवाह सम्पन्न करवाया। तत्पश्चात एक बहुत ही गहन और विचार उत्प्रेरक वार्ता देते हुए उन्होंने सादगी और सन्तुष्टि की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

उसके बाद गुरुदेव एक निजी दौरे पर चले गये, जहाँ से ५ अगस्त को उन्होंने चेन्नई के लिये प्रस्थान किया।

चेन्नई

चेन्नई आने के बाद जब ८ तारीख, रविवार को उन्होंने सत्संग करवाया, तब अभ्यासियों के चेहरों पर खुशी साफ तौर पर झलक रही थी। ९ तारीख को वे 'गायत्री' के लिये रवाना हुए, जहाँ सायँकाल विभिन्न विषयों पर जैसे एक अभ्यासी का दायित्व और विभिन्न तरह की संस्कृतियों के बारे में चर्चा की।

१४ तारीख की शाम को गुरुदेव ने ओमेगा स्कूल में हॉस्टल का भ्रमण किया और छात्रों के साथ रात्रिभोज किया। गुरुदेव काफी खुश थे और दिल खोलकर सबके साथ समय बिताया। उन्होंने वहाँ एक वार्ता दी, छात्रों के प्रश्नों के उत्तर दिये तथा छात्रों के उस समूह द्वारा गाये गये गीत का आनन्द उठाया जो उसी समय अन्तरस्कूल प्रतियोगिता से पुरुस्कार जीत कर लौटा था। उन्होंने संगीत के महत्व को बताते हुए कहा कि संगीत आत्मा का पोषण है और वे आशा करते हैं कि स्कूल में संगीत और गायन के भरपूर कार्यक्रम होंगे। हर एक ने गुरुदेव के साथ समय बिताकर अपने आप को कृतार्थ पाया।

१६ से २० अगस्त तक 'उत्तरी अमरीका की गोष्ठी' के लिये उत्तर अमरीका से ८०० से भी अधिक अभ्यासी और २०० बच्चे मणपाक्कम आश्रम पहुँचे।

गुरुदेव की उपस्थिति में सत्संग और उनकी वार्तायें इस गोष्ठी की मुख्य विशेषताएं थी। भाई कन्नन तथा भाई पी. आर. कृष्णा द्वारा दी गई वार्ताएं, श्री रामचन्द्र मिशन-अमरीका तथा श्री रामचन्द्र मिशन-कनाड़ा की आम सभा

पनवेल आश्रम

ओमेगा स्कूल छात्रों के साथ

की वार्षिक बैठक, गुरुदेव द्वारा नये अभ्यासियों से वार्तालाप, प्रशिक्षकों और कार्यकारी दल की बैठक, ओमेगा स्कूल का दौरा, प्रश्नोत्तर सत्र तथा उत्तरी अमरीकी अभ्यासियों और बच्चों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियां इस गोष्ठी की अन्य विशेषतायें रहीं।

परियों की कहानी की तरह, पहली सिटिंग से ही जैसे किसी ने करिश्मा सा कर दिया हो, जिसके कारण अनावश्यक विचारों और घर की चिन्ताओं से सहज ही छुटकारा मिल गया था। अमरीका की आम सभा की बैठक में सबको सम्बोधित करते हुए गुरुदेव ने कहा कि हमारे सामने अपार सम्भावनायें हैं जिसे हमें अपने कब्जे में कर लेना चाहिये, नाकि ढ़ेर लगाना चाहिये, "...जैसे कि एक गिलहरी को जब कोई अखरोट मिल जाता है तो वह उसे कहीं पर गाड़ देती है और अकसर सर्दियों में, बर्फ के समय वह अपने ही गाड़े हुए उस अखरोट के ढेर पर मृत पायी जाती हैं, जिसको उसने नहीं खाया।

पूरे सेमीनार के दौरान गुरुदेव की कॉटेज के द्वार पूर्ण रूप से समय–समय पर खुले रहते थे ताकि सभी उनके निकट जा सकें। यह भाव, उदारता तथा हिदायत– दोनों की तरफ संकेत करता है, जैसे कि हमें बतलाना चाह रहे हों कि कैसे अपने लक्ष्य को प्राप्त करें। भाइयों और बहनों, अपने राष्ट्र के रूपान्तरण का आरम्भ और अन्त आपसे ही होता है–अपने हृदयपट खोलिये और उन्हें कभी भी बन्द न होने दीजिये। इस गोष्ठी का समापन शुक्रवार, २० अगस्त को हुआ। सभी अभ्यासी अपने दिल में उनकी उपस्थिति में कुछ और समय बिताने की लालसा लिये उनकी कृपा और प्रेम से लबालब भरे हुए थे।

नये प्रकाशन

लखनऊ में जन्मोत्सव के दौरान निम्नलिखित नये प्रकाशनों का विमोचन हुआ :

जर्मनी की बहन ब्रिजिट स्मिथ द्वारा लिखित और चित्रित इस पुस्तक में बच्चों और अभिभावकों के लिये सहजमार्ग के १० सिद्धान्तों को सरल शब्दों में प्रस्तुत किया गया है। यह वास्तव में एक कलात्मक रचना है।

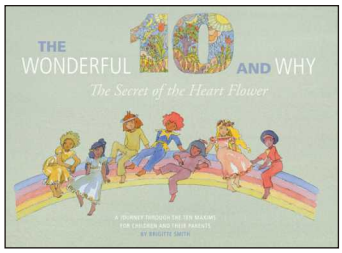

'वे, हुक्का और मैं' की श्रृंखला का दूसरा भाग 'हबल–बबल' की प्रतिलिपि एक साथ ७ भाषाओं: हिन्दी, मराठी, गुजराती, कन्नड़, तमिल, तेलगु और मलयालम में जारी की गई है।

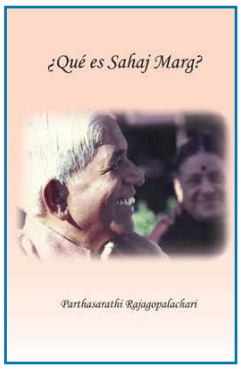

सहज मार्ग क्या है
स्पेनिश

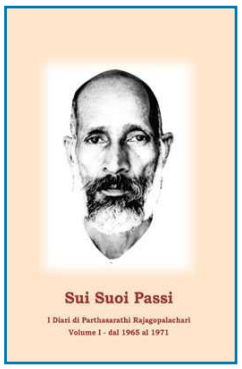

उनके पदचिन्हों पर– भाग १
इटालियन

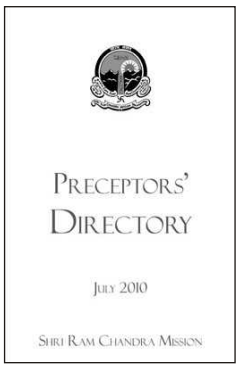

प्रिफेक्ट डॉयरेक्टरी

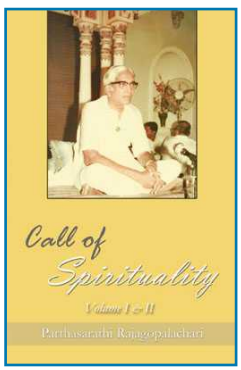

आध्यात्मिकता की पुकार– भाग १ और २

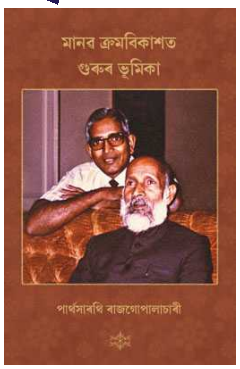

मानव विकास में सद्गुरू की भूमिका – आसामी

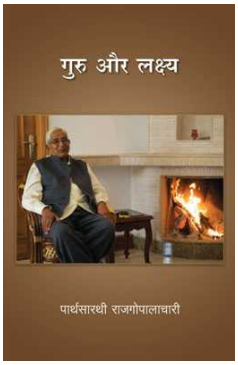

गुरु और लक्ष्य
हिन्दी

हृदय की आवाज २००५
हिन्दी

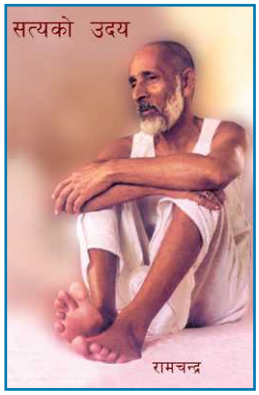

सत्य का उदय
नेपाली

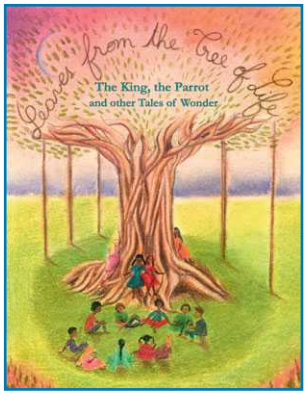

लीव्ज़ फ्रॉम दा ट्री ऑफ लाइफ–अंग्रेजी

प्रिसेप्टर ज़ोरनल

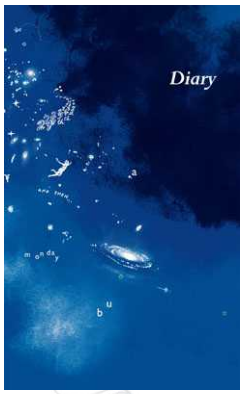

यूथ डायरी

अतीत की एक झलक

लालाजी महाराज का जन्म शताब्दी समारोह, मद्रास, १९७३

'उनके पदचिन्हों पर– भाग २' के शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित गुरुदेव की इस डायरी में इस अवसर का बहुत ही खूबसूरती से वर्णन किया गया है। समारोह का प्रारम्भ एक सामूहिक भजन के साथ हुआ, जिसका नेतृत्व हमारी प्रिय मामी ने किया था। मदुरई से विशेष रूप से इस अवसर के लिये मगँवाई गई गुलाब और चमेली की माला गुरुदेव ने बाबूजी को पहनाई। लालाजी की रचनाओं का संकलन 'ट्रूथ इटरनल' का विशेष रूप से विमोचन हुआ। दस–दस रुपये की कीमत वाली ये सारी पुस्तकें विमोचन के तुरन्त बाद ही बिक गईं।

गुरुदेव इस बात का स्मरण करते हुए बताते हैं कि बाबूजी महाराज ने 'विशेष शताब्दी स्मारिका' में प्रकाशित अपने संदेश को पढ़ा: "उन्होंने तैयार किये गये सन्देश को लगभग २० मिनट तक पढ़ा और लालाजी का नाम आने पर भावुक होने के कारण २ बार उनका गला रुंध गया। एक बार उनकी अश्रुधारा बह निकली और आगे पढ़ने से पहले उन्हें अपने आँसु पोछने के लिये रुकना पड़ा। अपने गुरू के प्रति क्या प्रेम और श्रद्धा थी उनकी ! क्या हम अपने गुरू के प्रति कभी उनकी नकल कर पायेंगे।

बाबूजी के संदेश ने हमारे अन्दर जो भाव जगाया, उसका वर्णन करना मुश्किल है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह हमें, हमारे दिल की गहराइयों में ले जा रहा है, जो हमें, हमारे जीवन के वास्तविक लक्ष्य और अपने गुरुदेव के साथ हमारे शाश्वत सम्बन्ध की याद दिलाता है।

गुरुदेव प्रेम भरी यादों का स्मरण करते हैं कि जिस तरह से इस समारोह का आयोजन किया गया था, उसे देखकर बाबूजी महाराज कितने खुश हुए थे। २७ फरवरी को वे लिखते हैं कि, "सायँकाल गुरुदेव गायत्री पधारे और जब हम अकेले थे, मुझे गले लगाकर बोले, "मैं तुमसे प्रसन्न हूँ, तुमने बहुत बड़ा कार्य किया है।" आइये, हम इस आशा के साथ प्रार्थना करें कि हम भी अपने प्रेम, श्रद्धा और प्रतिबद्धता से अपने गुरुदेव को ऐसी प्रसन्नता दे सकें।

इस अवसर पर बाबूजी महाराज के संदेश के कुछ अंश

हमें इस अवसर का लाभ उठाकर गुरुदेव और सिर्फ गुरुदेव में ही समा जाना चाहियें जो आध्यात्मिक उत्थान के लिये भोजन और टॉनिक का काम करेगा। स्मरण इस प्रकार किया जाना चाहियें कि स्मरण का भाव हर चीज से छलकता हुआ सा महसूस हो। नाश्वान प्राणियों के लिये यह वास्तविक स्मरण है। यह हमारे कल्याण के लिये एक खेल मात्र है।"

"यदि कोई मनुष्य अपने जीवन की समस्याओं को आसानी से हल करना चाहता है, तो उसे अपने मन को सही सुझाव देने चाहियें। यह वो अवस्था है जो अभ्यास और स्वयं को उचित तरीके से ढालने से आती है। अपनी अवस्था, जो दिव्य है, उसमें रहना बहुत आसान है। यह विकास की सुनिश्चित प्रक्रिया है। वास्तविकता की प्राप्ति के लिये मामूली सा झुकाव ही भविष्य के निर्माण की शुरुआत कर देगा।

अखिल भारतीय निबन्ध लेखन कार्यक्रम, २०१०

इस कार्यक्रम का आयोजन श्री रामचन्द्र मिशन द्वारा संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय युवा वर्ष (अगस्त, २०१०–२०११) के अवसर पर भारत और भूटान के संयुक्त राष्ट्र सूचना केन्द्र के सहयोग से किया जा रहा है। छात्र निम्नलिखित भाषाओं में निबन्ध लिख सकते हैं: अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, मलयाली, मराठी, तमिल, तेलगु। इस कार्यक्रम की अधिक जानकारी के लिये तथा भाग लेने के लिये कृपया अपने संस्थान प्रमुख से बात करें या इस पते पर essay2010@sahajmarg.org हमें मेल भेजें।

आप विवरणिका तथा प्रादेशिक भाषा (अंग्रेजी, गुजराती, मलयालम, मराठी, हिन्दी, कन्नड़, तमिल, तेलगु) के पर्चे मिशन की वेबसाइट से भी ले (डाउनलोड़ कर) सकते हैं।

"चरित्र जीवन की सुरक्षा करता है।"
[कक्षा ६ से ९ के लिये]

"स्वतंत्रता का अर्थ मनमानी की अनुमति नहीं, बल्कि स्वयं के लिये जो सही है उसे चुनने का विवेक है।"
[कक्षा १० से १२ के लिये]

"महत्वाकांक्षा से आकांक्षा की ओर, प्राप्त करने से बनने की ओर।"
[स्नातक और परास्नातक]

नई नियुक्तियां

२४ अगस्त, २०१० को गुरुदेव ने निम्नलिखित नियुक्तियां की:

भाई पी.सी. जौहरी
प्रबन्धक, सिलीगुड़ी आश्रम

भाई एस. एस. मुरगोड़
प्रबन्धक, क्रेस्ट बंगलोर

पत्राचार सम्बन्धी दिशानिर्देश

सभी अभ्यासियों से निवेदन है कि गुरुदेव से पत्राचार के लिये इस पते
http://www.sahajmarg.org/resources/correspondence-guidelines
पर दिये गये दिशानिर्देशों को देखें और उनका पालन करें।

अनुवादकों की आवश्यकता

एकोज़ इंडिया टीम को अपने समाचार पत्र के लिये अंग्रेजी से हिन्दी, मराठी, गुजराती, बंगाली, तमिल, तेलगु, कन्नड़ और मलयालम भाषाओं में अनुवाद करने के लिये स्वयंसेवकों की आवश्यकता है। आपसे अनुवाद करने के साथ–साथ टाइप करने की भी उम्मीद की जाती है।

आप अपने बारे में, कम्प्यूटर सम्बन्धित आपकी जानकारी तथा काम के लिये उपलब्ध समय के ब्यौरे के साथ कृपया हमसे इस पते पर in.newsletter@srcm.org संपर्क करें।

येलबर्गा

ज्ञान का अभ्युत्थान एवं अभ्यास

उ. कर्नाटक

नये अभ्यासियों के लिए अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रमों की एक श्रृंखला का निम्नलिखित जगहों पर आयोजन किया गया – बसवाकल्यान, बीजापुर, गड़ग, येलबर्गा, हुबली और धारवाड़, बेलुर, कल्लूर, एवं नवनगर। भाई निजलिंग्प्पा, डॉ. गजेन्द्र सिंह, भाई अजीत कामथ, बहन सुजाता नावले, बहन गीता डी, भाई प्रहलाद पाक्नीकर, बहन गीता रश्मि, एवं भाई राजू काशमपूरकर ने कन्नड़ में नये प्रवेशकों के लिये स्मृति के द्वारा तैयार किये गये प्रशिक्षण कार्यक्रम के अलावा ऑडियो– वीडियो की सहायता से कार्यक्रमों का आयोजन किया।

बसवकल्यान

गड़ग

प्रशिक्षण में सहज मार्ग साधना के मूलभूत सिद्धान्त, ध्यान, सफाई, डायरी लेखन, प्रार्थना एवं भंडारे, हमारे मिशन का उद्देश्य, हमारे गुरुदेव का संक्षिप्त परिचय, तथा मिशन की अन्य शाखाँयें जैसे एस.एम.एस.एफ़ एवं उनके कार्य, क्रेस्ट, स्मृति एवं रीट्रीट केन्द्र से सम्बन्धित जानकारी प्रदान की गई।

आन्ध्र प्रदेश

करनूल में १८ जुलाई को पूर्ण दिवसीय ए.टी.पी.– प्रथम स्तर का आयोजन किया गया जिसमें लगभग २१ अभ्यासियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों में मुख्यतः युवा अथवा पिछले एक वर्ष में सहज मार्ग शुरू करने वाले लोग शामिल थे। इस कार्यक्रम का बड़े उत्साह के साथ स्वागत हुआ। प्रतिभागियों ने महसूस किया कि गुरुदेव के ऑडियो– वीडियो पर दिखाये गये अंशों द्वारा उनकी साधना से सम्बन्धित बुनियादी प्रश्नों का समाधान हुआ। उन्होंने इस कार्यक्रम को काफी फायदेमंद बताते हुए कहा कि इस कार्यक्रम के ज़रिये उन्हें एस.एम.एस.एफ़ की गतिविधियों जैसे क्रेस्ट, रीट्रीट केन्द्र आदि के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त हुई है।

करनूल

येम्मिंगनूर केन्द्र में ८ अगस्त को ३० अभ्यासियों के लिये तेलगु में एक दिवसीय एटीपी– प्रथम स्तर का आयोजन किया गया। येम्मिंगनूर केन्द्र एक उभरता हुआ ८० अभ्यासियों का केन्द्र है। पिछले एक वर्ष में या उससे पहले सहज मार्ग साधना शुरू करने वाले लोगों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। अधिकांश अभ्यासियों के लिये साधना शुरू करने के बाद उनका यह पहला प्रशिक्षण कार्यक्रम था। सभी ने पूरे कार्यक्रम के दौरान आपसी वार्तालाप के साथ इसमें जोरशोर से भाग लिया।

येम्मिगनूर

तमिलनाडु

चेट्टिपालयम, तिरुप्पूर के योगाश्रम में २५–२७ जून तक तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में तमिलनाडु के १९ केन्द्रों से ६९ अभ्यासियों ने भाग लिया। दक्षिण तमिलनाडु के ज़ोनल प्रभारी भाई विश्वनाथ राव ने स्वागत भाषण दिया। भाई धानुमूर्ती एवं बहन रम्या रामप्रभु ने सहज मार्ग में ध्यान, सफाई एवं प्रार्थना विषयों पर प्रकाश डालते हुए तमिल में ए.टी.पी. का आयोजन किया। दूसरे दिन भाई अनंत ने 'अनुशासन एवं आज्ञापालन' विषय पर एक सत्र आयोजित किया। इसके पश्चात भाई रवि सुब्बैया ने 'सतत स्मरण' पर एक वार्ता दी। दोपहर के सत्र में भाई राधाकृष्ण ने 'विश्वास' विषय पर वार्ता दी। तीसरे दिन रविवार के सत्संग के उपरान्त बहन रम्या ने 'दस नियमों' पर अपने विचार प्रकट किये। भाई विश्वनाथ राव एवं भाई प्रकाश की प्रेरणादायक वार्ताओं के साथ इस कार्यक्रम का समापन हुआ। प्रतिभागियों ने व्यक्त किया कि इस कार्यक्रम के द्वारा वे बहुत लाभान्वित हुए हैं।

तिरुप्पूर

घरों में आयोजित सम्मेलन और जन सभाएं

गुलबर्गा, उत्तर कर्नाटक

गुलबर्गा में २३ जून को बहन राधाबाई के घर पर आयोजित एक जनसभा में ६ जिज्ञासुओं ने भाग लिया। बहन मीरा कुलकर्णी द्वारा सहज मार्ग के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार व्यक्त करने के बाद भाई मनोहर सिंह ने प्रश्नोत्तर सत्र का संचालन किया। चार जिज्ञासुओं ने उसी दिन साधना शुरू कर दी। इस पूरे सत्र के दौरान घर में आनन्द का वातावरण छाया रहा।

११ जुलाई को गंगावटी तालुक के येलबर्गा नामक स्थान पर सत्संग के बाद एक जन– सभा का आयोजन किया गया जिसमें १० लोगों ने कार्यक्रम में भाग लिया। इस अवसर पर स्थानीय प्रशिक्षक भाई रुद्रप्पा की उपस्थिति में भाई राजू काशमपुरकर, भाई राजूलाल और भाई निजलिन्गाप्पा ने अपने विचार व्यक्त किये। अधिकतर लोगों ने साधना शुरू करने की अपनी इच्छा ज़ाहिर की।

चिक्कमगळूर, दक्षिण कर्नाटक

चिक्कमगळूर केन्द्र के अभ्यासी और कुछ जिज्ञासु १५ अगस्त को एक अभ्यासी भाई के घर एकत्रित हुए। भाई सत्यनारायणन ने आये हुए जिज्ञासुओं को 'तीन म' (मिशन, मार्ग और मालिक) के बारे में समझाया, जिससे अभ्यासियों को भी प्रेरणा मिली।

गुरुदेव की एक डी.वी.डी. दिखायी गयी, जिसके बाद वहाँ उपस्थित अभ्यासियों ने पद्धति के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार व्यक्त किये। बहन मीना ने सहज दीप की पुरानी पत्रिका से चिक्कमगळूर में एक अभ्यासी के फार्म हाउस पर गुरुदेव के दौरे के बारे में एक किस्सा पढ़ कर सुनाया। इससे प्रेरित होकर भाई के.यू. शेट्टी ने कुछ और किस्सों के माध्यम से बताया कि किस प्रकार गुरुदेव अभ्यासियों की चिन्ता करते हैं।

कार्यक्रम के अन्त में, अभ्यासियों को ध्यान में बैठकर इस बात पर विचार करने को कहा गया कि किस प्रकार प्रत्येक अभ्यासी मिशन के कार्यों में मदद कर सकता है। कुछ अभ्यासियों का सुझाव था कि वहाँ पर एक आश्रम का निर्माण किया जाना चाहिये और इस प्रकार के सम्मेलनों का आयोजन जल्दी–जल्दी किया जाना चाहिये।

एक सफल दिवस

त्रिसूर

इन्दौर

हासन

त्रिसूर, केरल,

४ जुलाई को त्रिसूर के योगाश्रम में पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सुबह के सत्संग के बाद बच्चों ने एक राजा की कहानी के माध्यम से ईमानदारी और सत्यता पर आधारित एक नाटक प्रस्तुत किया। यह एक राजा की कहानी थी जो एक ईमानदार नागरिक की तलाश में था। इस कहानी ने हमारे दैनिक जीवन में सत्य और ईमानदारी के महत्व को प्रस्तुत किया। जिस उत्साह से बच्चों ने इस नाटक को प्रस्तुत किया, वह इस बात का प्रतीक है कि सहजमार्ग के प्रतिबद्ध अभ्यासी बनने के लिये उन्होंने किस प्रकार इन मूल्यों को अपने अन्दर उतारा है।

इसके बाद मालिक का एक वीडियो चलाया गया जिसमें उन्होंने यह बताया कि किस प्रकार दर्द हमारी आध्यात्मिक यात्रा का एक हिस्सा है। क्षेत्र प्रभारी भाई टी.पी. नारायणन ने गुरुदेव की वार्ता का मलयालम में अनुवाद किया। अभ्यासियों ने 'व्यक्तिक्त्व का प्रकटन' पुस्तक में प्रकाशित अनेक वार्ताओं में निहित विचारों को प्रस्तुत किया। जब १९९३ में सर्वप्रथम यह पुस्तक प्रकाशित हुई थी, उस समय ऐसा प्रतीत होता था कि यह पश्चिमी लोगों के लिये एक संदेश है; किन्तु २००९ में इसके पुनः प्रकाशन के बाद ऐसा लगता है कि वैश्वीकरण के बाद ये सन्देश सम्पूर्ण विश्व के लिये हैं। इस पुस्तक में दस सिद्धान्तों के बारे में विस्तृत टिप्पणी की गई है, जो मूल्याधारित शिक्षा के आधारस्तम्भ हैं। हमे अपने दैनिक जीवन में किस प्रकार मूल्यों का पालन करना चाहियें, इस बात की भी इस पुस्तक में विस्तृत चर्चा की गई है। कार्यक्रम का समापन शाम के सत्संग के साथ हुआ।

दस सिद्धान्तों पर चर्चा, इन्दौर

इन्दौर केन्द्र के २७ अभ्यासियों ने दस सिद्धान्तों पर चर्चा करने और उनका अनुपालन के लिये एक समूह का गठन किया। यह लोग नियमित रूप से मिलकर हर बार एक सिद्धान्त पर चर्चा करते हैं। इसके बाद सभी इस सिद्धान्त का पालन करने का प्रयास करते हैं। जिससे उन सभी ने अपने अन्दर एक अलग तरह का उत्साह पाया। इस कार्यक्रम का संचालन भाई अविनाश करमरकर और भाई राजेश रावरकर ने किया।

हासन, दक्षिण कर्नाटक

रविवार, ११ जुलाई को भाई श्रीनिवास और भाई सुब्रमन्या को हासन केन्द्र पर पूरे दिन के कार्यक्रम के संचालन के लिये आमन्त्रित किया गया जिसमें हासन और चिक्कमगळूर के लगभग ६० अभ्यासियों ने भाग लिया।

सत्संग के बाद पहले सत्र में भाई श्रीनिवास ने सहज मार्ग साधना, पद्धति, और गुरू के महत्व पर चर्चा की। दूसरे सत्र में भाई सुब्रमन्या ने चरित्र के महत्व को बताते हुए अपने जीवन में दस सिद्धान्तों को लागू करने की आवश्यकता पर बल दिया।

दोपहर के समय प्रश्नोत्तरी सत्र में अभ्यासियों की रोजमर्रा की साधना में आने वाली कई शंकाओं का निराकरण किया गया। कुछ अभ्यासियों ने अपने अनुभवों को सबके साथ बाँटा। शाम के सत्संग के साथ इस सत्र का समापन हुआ।

बेंगलूरू

गाजियाबाद

मुरादाबाद में सामूहिक चर्चा

१५ अगस्त को मुरादाबाद केंद्र के "योगाश्रम" के ध्यान–कक्ष में सामूहिक चर्चा का आयोजन किया गया। ध्यान के बाद में चर्चा का एक सत्र रखा गया जिसमें ३० अभ्यासियों ने हिस्सा लिया। भाई अमित द्वारा आयोजित इस सत्र में अभ्यासियों को सात समूह में बाँटा गया । लखनऊ उत्सव के दौरान गुरुदेव द्वारा दी गई वार्तायें "सेवा" और "आत्मोंन्नति" चर्चा के विषय थे । प्रत्येक समूह को चर्चा के परिणाम तथा सारांश को बताने के लिये कुछ मिनट दिये गये । चर्चा में भाग लेने वालों ने यह महसूस किया कि भाईचारे की भावना से ओतप्रोत यह सत्र बहुत लाभकारी था तथा प्रिय गुरुदेव के प्रति प्रेम एवं आभार से भरा हुआ था।

बेंगलूरू के स्वंयसेवकों के लिये एक यादगार सप्ताहांत

बेंगलूरू केन्द्र तीन आश्रमों –परमधाम, जोनल एवं बनशंकरी को पाकर धन्य हुआ है। अभ्यासियों को प्रत्येक आश्रम में समय बिताने, आध्यात्मिक वातावरण में रहने और स्वयंसेवक कार्य करने का अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से "आश्रम में सप्ताहांत" कार्यक्रम की योजना बनाई गई । सबसे पहले इस कार्यक्रम का आयोजन जोनल आश्रम में जून के महीने में किया गया उसके बाद इसे १० एवं ११ जुलाई को बनशंकरी आश्रम में किया गया ।

अभ्यासियों ने कई गतिविधियों में हिस्सा लिया जैसे कि ध्यानकक्ष एवं आसपास की जगहों की सफाई, सुबह का नाशता एवं दोपहर का खाना बनाना । दिन के दूसरे हिस्से में सेवा के अनेक पहलुओं एवं अभ्यासियों द्वारा स्वयंसेवक कार्य में अपनाए गये रवैये के बारे में एक शिक्षाप्रद सत्र हुआ । रविवार को सत्संग के बाद बेंगलूरू केन्द्र में हो रही गतिविधियों के बारे में एक प्रस्तुति दी गई जिसके उपरान्त अनेक अभ्यासियों ने अपना योगदान देने की इच्छा व्यक्त की।

परमधाम आश्रम में १३ अगस्त की शाम को कार्यक्रम शुरू हुआ । अगले दो दिनों में ३० स्वयंसेवकों ने बड़े उत्साह के साथ कार्य की शुरुआत करते हुए कई कार्य किये जैसे बाल–केन्द्र के लिये जगह की सफ़ाई करना, पानी की टंकी और बरसात के पानी की निस्पंदन इकाई (फ़िलट्रेशन युनिट) की सफाई करना, ऊपर का कमरा एवं रसोई के राशनघर को सुव्यवस्थित करना, ध्यान–कक्ष की सफाई करना तथा सब्जियाँ उगाने के लिये जगह तैयार करना ।

दोपहर के खाने के पहले, स्वयंसेवकों ने "सेवा" पर दी गई गुरुदेव की वार्ता का वीडियो देखा । खाने के बाद एक–दूसरे को भलीभाँति जानने के उद्देश्य से उन्होंने पास ही की एक झील के किनारे रम्य वातावरण में कुछ समय बिताया । कुछ अभ्यासियों ने भंडारे एवं गुरुदेव के साथ के अपने अनुभव बताये । रात में कैंप फ़ायर ने सबको खुशी से भर दिया, बच्चों ने गायकी का आनन्द लेते हुए वहाँ उपस्थित सभी अभ्यासियों के हृदय को आनन्द से भर दिया । रात के खाने के बाद एक फिल्म दिखाई गयी ।

अगले दिन, सुबह के सत्संग के बाद केन्द्र–प्रभारी भाई प्रभाकर की प्रेरणादायक वार्ता के साथ इस कार्यक्रम का समापन हुआ । इस कार्यक्रम के द्वारा अनेक क्षेत्रों के अभ्यासियों को आपस में मिलने तथा अपने विचारों को एक–दूसरे के साथ बाटँने का अनोखा अवसर मिला जिसके कारण अलग–अलग प्रकार की सोच सामने आई और कई तरह की समस्याओं का समाधान हो सका ।

युवा–समय (ए टाइम फोर यूथ) – गाजियाबाद

गाजियाबाद केन्द्र ने युवाओं के लिये २६ एवं २७ जून को, दो दिन की आवासीय गोष्ठी का आयोजन किया । गोष्ठी का विषय था – "युवावस्था : प्रयास एवं प्रतिबद्धता का समय"। भाई महावीर सिंह रोहिला के स्वागत भाषण के बाद "युवा" विषय पर गुरुदेव की वार्ता सुनाई गई । इसके बाद बहन प्रीति ने "प्राथमीकरण करना सीखें" नामक गतिविधि का संचालन किया । बहन अनीता ने रात के खाने के बाद मनोरंजक खेलों का संचालन किया । दूसरे दिन सत्संग के बाद विचारों की शक्ति को दर्शाते हुए "द सिक्रेट" नाम के एक वृतचित्र को दिखाया गया । बहन अनीता ने " युवाओं की समाज एवं प्रकृति के प्रति जिम्मेंदारी" के ऊपर एक प्रस्तुति पेश की । भाई जतिन ने गुरुदेव की वार्ताओं से ली गई सुक्तियों के साथ"मन के विनियमन" पर आधारित एक गतिविधि का संचालन किया । प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम को खूब सराहा ।

नये केन्द्र– जम्मू से समाचार

जम्मू में नई खरीदी गयी जमीन पर १५ अगस्त को "वनमहोत्सव कार्यक्रम"

के तहत वृक्ष लगाये गये ।। आश्रम निर्माण के लिये खरीदी गई एक एकड़ जमीन पर ९० प्रकार की विभिन्न प्रजातियों वाले पेड़ जैसे – अर्जुन, बोटल ब्रश, पाइन, नीम, आवँला, अलेस्टोनिया, पंच सितारा, चाइना रोज़, शीशम, सिल्वर ओक इत्यादि का वृक्षारोपण किया गया ।
तपतपाती गर्मी के बावजूद ३० अभ्यासियों ने इसमें भाग लिया । भोजन

कक्ष, रसोईघर एवं शौचालय की निर्माण–योजना गुरुदेव की अनुमति के लिये भेज दी गयी है। आश्रम की चारदीवारी का निर्माण जुलाई २०१० में ही पूरा हो गया है।

कर्नाटक, दावंगेरे में आश्रम–निर्माण

दावंगेरे केन्द्र की शुरुआत मुठ्ठी भर अभ्यासियों से हुई थी, अब इस केन्द्र में १०० अभ्यासी हैं। प्रारम्भ में रविवार का सत्संग एक अभ्यासी के घर पर हुआ करता था, बाद में अभ्यासियों की संख्या में वृद्धि के साथ एक स्कूल में होने लगा। केन्द्र के विस्तार को देखते हुए एक आश्रम की जरूरत महसूस होने लगी। आश्रम के लिये खरीदी २ एकड़ जमीन के साथ यह सपना हकीकत में बदल गया। २ फरवरी २००९ को इसकी नींव रखने के बाद २५ अप्रैल २०१० को यहाँ सत्संग कराया गया। यहाँ पर निर्माण कार्य की शुरुआत ध्यान–कक्ष तथा रसोईघर को चिन्हित करने से हुई। बरामदे को मिलाकर ध्यान–कक्ष का आकार ४५ फुट चौड़ा और ४५ फुट लंबा है तथा भन्डार घर के रूप में बने कार्यालय का आकार ६० फुट लंबा एवं १५ फुट चौड़ा है।

ध्यान–कक्ष का निर्माण खम्बे के निचले स्तर तक हो चुका है तथा रसोई की छत की ढलाई की जा चुकी है। निर्माण कार्य, बागवानी और पीने के पानी की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए एक और बोरवेल की खुदाई की गई है। जमीन को हरा –भरा बनाने के लिये ६० टीक, १० नीम, १० होंगे और कुछ नारियल के वृक्ष लगाये गये। नये आश्रम की इमारत का निर्माण इस वर्ष अक्टूबर तक पूरा होने की उम्मीद है।

बच्चों के लिये नैतिक मूल्य

हाथरस, मध्य प्रदेश

हाथरस केन्द्र ने २७ जून को वी बी एस ई कैम्प का आयोजन किया जिसमें ३० बच्चों ने बहुत उत्साह एवं उमंग के साथ हिस्सा लिया। सत्र का आरम्भ प्रार्थना पर ५ मिनट ध्यान करने के साथ हुआ। भाई अरविन्द ने सहज मार्ग तथा इसके उद्देश्य का परिचय दिया। भाई रिशिराज सिंह ने शारीरिक व्यायाम, दैनिक जीवन में स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के महत्व के बारे में समझाया, जिसे बच्चों ने बड़े ध्यानपूर्वक सुना। भाई अमित, भाई हरेन्द्र तथा दूसरे स्वयं सेवकों ने अनेक लघु नाटिकाओं, स्पेलिन्ग बी, बौद्धिक एवं सामान्य ज्ञान के खेलों का आयोजन करके इस कैम्प को आनन्ददायक बनाया। ग्रीष्म कैम्प का समापन भागीदारों को स्मृति चिन्ह के वितरण के साथ हुआ।

इन्दौर, म.प्र.

इन्दौर केन्द्र ने २१ से २५ जून तक बच्चों के लिये वी.बी.एस.ई. कैम्प का आयोजन किया जिसमें ७० बच्चों ने हिस्सा लिया। यह लगातार १२ वाँ साल था जब इस केन्द्र ने बच्चों में मूल्यों के समावेश हेतु इस तरह के कार्यक्रम का आयोजन किया। वी बी एस ई के इस सत्र में मिट्टी की कला, काँच की पेंटिन्ग, नृत्य एवं बिना अग्नि के खाना पकाना आदि गतिविधियों का समावेश किया गया।

दिन की शुरुआत मिशन की प्रार्थना के साथ हुई जिसके बाद ५ मिनट का मौन रखा गया और फिर योग किया गया। अगले १० मिनट तक एक महत्वपूर्ण सन्देश के साथ एक फिल्म दिखाई गयी। इसके बाद लगभग २ घन्टों तक बच्चे अपने–अपने समूह में रहे। उन्होंने विभिन्न क्रियायों के द्वारा बाँटना, सराहना तथा सहयोग करना जैसे नैतिक मूल्य सीखे।

पीलीभीत, उत्तर प्रदेश

पीलीभीत केन्द्र ने ११–२० जून तक १० से १४ वर्ष की आयु के बच्चों के लिये वी बी एस ई ग्रीष्मकालीन कैम्प का आयोजन किया जिसमें ४० बच्चों ने बहुत उत्साह के साथ हिस्सा लिया। कैम्प सुबह ६:३० बजे आरम्भ हुआ। विभिन्न गतिविधियों को अलग–अलग सत्रों में विभाजित किया गया। पहले सत्र में शारीरिक व्यायाम, प्रार्थना एवं ध्यान के अलावा वी बी एस ई के एक विषय को शामिल किया गया। इसके साथ–साथ विभिन्न क्षेत्रों से आये हुए अतिथियों ने अलग–अलग विषयों पर जैसे – समाचार पत्र, यातायात के नियम, डाकघर, समय प्रबन्धन, कम्प्यूटर, स्वास्थ्य आदि के बारे में वार्ताएं और प्रस्तुतियाँ दीं। इसके अलावा इस कार्यक्रम में अन्य गतिविधियाँ भी शामिल थी जैसे कि कागज को मोड़कर चिड़िया बनाना, हस्तशिल्प, चित्रकारी , गायकी, निबन्ध लिखना, लघु नाटिका आदि। कैम्प के अंतिम दिन भाग ले रहे बच्चों के अभिभावकों को बच्चों द्वारा प्रस्तुत गान और नृत्य देखने के लिये आमंत्रित किया गया।

श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया समाचार-पत्र
सितम्बर २०१०
भाग ३, अंक ४

प्रकाश के केन्द्र

"जीवन एक चिरकालिक शिक्षण प्रणाली है... यह जीवन के साथ समाप्त नहीं होती। यह अनादि, अनन्त है। हम नहीं जानते कि उस शिक्षा का प्रारम्भ कहाँ हुआ, इसका अंत कभी नही होगा, क्योंकि जैसे-जैसे हम विकास के स्तर दर स्तर पर, क्रमशः आगे बढ़ते हैं, हम कार्यशील रहते हैं।"

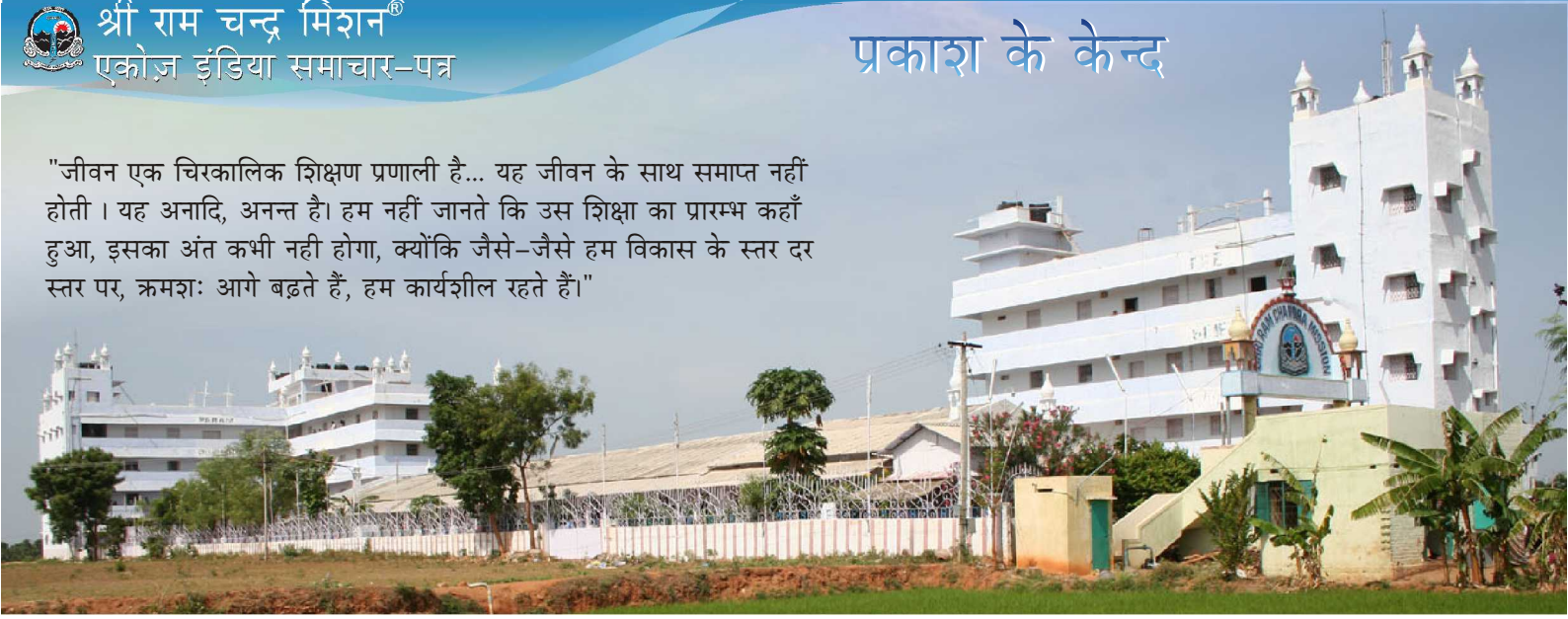

नाट्रमपल्ली,तमिलनाडु

नाट्रमपल्ली में स्थित आश्रम को अक्टूबर २००४ में श्री ओमप्रकाश ने मिशन को भेंट किया था, जो बाद में मिशन के अभ्यासी और प्रशिक्षक भी बने। गुरुदेव सड़क-मार्ग द्वारा अकसर बंगलोर और चेन्नई आते-जाते रहते हैं और यह आश्रम रास्ते में उनके पड़ाव के लिये एक आदर्श स्थान है। यह आश्रम येलगिरी पर्वतमाला से २० कि.मी. की दूरी पर स्थित एक गाँव में पहाड़ों से घिरा हुआ है।

आश्रम की एक एकड़ की भूमि लम्बी एवं संकरी है तथा लम्बाई में बना हुआ ये आश्रम दूर से एक युद्धपोत की तरह प्रतीत होता है। सम्भवत: यह उन कुछ आश्रमों में से एक है जो निर्माण के बाद हमारे मिशन को भेंट स्वरूप दिया गया है। इस आश्रम का निर्माण कई चरणों में हुआ है, जब और जैसे इस उदार दानकर्ता को इसके विस्तार हेतु आर्थिक साधन उपलब्ध हुए, तब-तब उन्होंने इसका निर्माण किया। इस आकार के आश्रम की आवास क्षमता देखने योग्य है। यहाँ तक कि जब इसे दान किया गया था, उस समय भी इस आश्रम में २००० अभ्यासियों के बैठने की क्षमता का एक ध्यान-कक्ष तथा ५०० लोगों के ठहरने की जगह, रसोई एवं भोजन आदि की पर्याप्त सुविधायें उपलब्ध थीं। कुछ छोटी इमारतों को मास्टर्स कॉटेज एवं पुस्तकालय में परिवर्तित कर दिया गया है।

उक्त आश्रम, इस क्षेत्र के श्री रामचन्द्र मिशन के केन्द्र व उपकेन्द्र के बीचों-बीच स्थित है और इस वजह से यह आध्यात्मिक जन-सम्मेलनों का केन्द्र बन गया है। रविवार को होने वाले सत्संग में तिरुपत्तूर, वानियामवाड़ी, वेल्लूकोट्टई और पच्चूर जैसे नज़दीकी केन्द्र के अभ्यासी उपस्थित होते हैं। इसके अतिरिक्त मासिक पूर्णदिवसीय कार्यक्रमों में हासूर, कृष्णागिरि, बरगुर, कावेरीपट्टनम, कुप्पम, पनन्डुर, जगदेवी, वी.कोटे, आर्नी और वेल्लोर केन्द्रों से कुल मिलाकर २०० से अधिक अभ्यासी उपस्थित रहते हैं।

पूज्य गुरुदेव ने अगस्त २००५ में आयोजित प्रशिक्षक गोष्ठी (केरल जोन) तथा दिसम्बर २००६ में तीन सप्ताह तक चलने वाली अंतर्राष्ट्रीय छात्रवृत्ति प्रशिक्षण कार्यक्रम की मेजबानी के लिये इस आश्रम का चयन किया था।

पिछले दो वर्षों के दौरान, आश्रम के दोनों ओर १.७५ एकड़ और ०.९४ एकड़ की अतिरिक्त भूमि को खरीदा गया है। ज़मीन के एक बड़े हिस्से पर सब्जियां, फल- फूल इत्यादि की खेती की जा रही है, जिससे अभ्यासियों को सेवा करने का अवसर मिलता है और आपस में भाईचारा बढ़ता है। वहाँ एक बहुत बड़ा पपीते का बगीचा है जिसका निर्माण आय का स्रोत बढ़ाने के लिये किया गया है, और इसे गुरुदेव की प्रशंसा पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, वे कहते हैं- यह देश का सबसे स्वादिष्ट पपीता है।

नाट्रमपल्ली आश्रम, जिज्ञासु हृदयों के लिये एक आध्यात्मिक उद्यान के रूप में अपनी सेवायें दे रहा है और हमेशा देता रहेगा तथा आगे आने वाले वर्षों में उनकी प्रगति हेतु अग्रसर रहेगा।

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org
© 2009 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. "Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.